International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 12; December 2016; Page No. 218-223

उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी : बघेलखण्ड की प्रमुख शिक्षण संस्थाएँ

विनोद कुमार पटेल

शोध छात्र इतिहास – अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

मानव जीवन में शिक्षा का सर्वोत्तम स्थान है क्योंकि शिक्षा के प्रभाव से ही हम मानव मात्र के कर्तव्याकर्तव्य के नियमों को जानकर सदाचरण करते हैं। इस आचरण का ज्ञान हमें शिक्षा से ही प्राप्त होता है। शिक्षा से संस्कार और संस्कार से आचरण, आचरण से विनम्रता प्राप्त होती है। विनयशीलता ही शिक्षा का फल है। भारतीय ऋषियों का यह उद्घोष है कि विद्या से अमृतत्व की उपलब्धि होती है। एवं अविद्या से बन्धन की प्राप्ति होती है। इस शाश्वत शास्त्रीय तत्व को हृदयंगम करने वाले ऋषियों ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति के लिए अन्य अनेक अनुष्ठानों के पूर्व शिक्षा पर विशेष बल दिया है क्योंकि ''संस्कारदोषादिन्द्रियदोषाच्च अविद्या'' संस्कार दोष और इन्द्रिय दोष के कारण अविद्या उत्पन्न होती है। अविद्या से अभिभूत होकर मनुष्य अनेक प्रकार के पापों की ओर प्रवृत्त होता है।

वस्तुत शिक्षा क्या है इस के उत्तर में कहा जा सकता है कि अविद्या जन्य पतनोंन्मुखी मानव के विकारों को दूर कर धार्मिक प्रवृतियों की ओर अग्रसर करने वाली विचार शक्ति ही शिक्षा है। शिक्षा की सफल अभिव्यक्ति पुरूषार्थ चुतष्टय की उपलब्धि है। पुरूषार्थ चतुष्टय से मानव के व्यक्तित्व का विकास ही भारतीय शिक्षा का प्रयोजन है।

मूल शब्दः बघेलखण्ड, शिक्षण, संस्थाएँ

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा मुख्यतया तीन विभागों में विभाजित की जा सकती है, प्रथम माता के प्रभाव से प्राप्त होने वाली शिशु–शिक्षा और संस्कार दूसरी पिता के प्रभाव से उत्पन्न सामाजिक विचार की शिक्षा है आचार्य के प्रभाव से प्राप्त होने वाली शिक्षा बालक जब छोटे–छोटे रहते हैं, तब सर्वप्रथम माता ही उन्हें बोलना, चलना, फिरना, उठना, बैठना सिखाती है, इसलिए बालक की प्रथम शिक्षक माता और द्वितीय शिक्षक पिता होता है। जो बालाकों के आवश्यकताओं पूर्ति करता है उन्हें मार्ग दर्शन देता हुआ आचार्य के पास पहुँचाता है। तृतीय शिक्षक आचार्य अपने शिक्षण कला–कौशल से उन बालकों को शिक्षा देता है।

वस्तुतः शिक्षक समाज का एक ऐसा निर्माता कलाकार है जो अपनी कला और कौशल से छात्रों में एक ऐसे व्यक्तित्व का विकास कर देता है, जिसके बल पर वह समाज या देश में अपने विशिष्ट क्षेत्र का निर्माण करता है। शिक्षक का यह कार्य देश या समाज में सदावन्दनीय माना जाता है। शिक्षक को समाज या देश का शिल्पी कहा जाता है।

मानव जीवन में जिन गुणों की आवश्यकता होती है, उन गुणों से सुसज्जित कर शिक्षक बालक को समाज को सौंपता है। अपने गुणों के बल पर बालक समाज में अपना गौरव पूर्ण आदर्श स्थापित कर शिक्षक की पूर्णाभिव्यक्ति करता है। इस प्रकार शिक्षा का समाज में प्रचार प्रसार करता है। मानव जितना कुशल होता है, समाज में उतना ही उसका व्यक्तित्व मुखरित होता है। जिसमें उसकी शिक्षा का योगदान रहता है।

प्राचीनकाल की शिक्षा पद्धति एवं वर्तमान काल की शिक्षा पद्धति में आकाश–पाताल का अन्तर दिखाई देता है। प्राचीन काल में शैशव के पश्चात् उपनयन संस्कार से बालक की शिक्षा प्रारम्भ होती थी। उपनयन के पश्चात् बालक गुरूकुल में गुरू की देख रेख में शिक्षा ग्रहण करता था। गुरू के जीवन का आदर्श शिष्य के संस्कार रूप में विकासित होता था। बालक साहचर्य से गुरूकुल में अपने व्यक्तित्व का विकास करता था। शिक्षक बालक को सर्वप्रथम वेदमन्त्रों के उच्चारण की शिक्षा देता था। शिक्षक द्वारा उच्चरित मन्त्र विद्यार्थी द्वारा सामूहिक रूप से दुहराया जाता था। यह प्रक्रिया निरन्तर जारी रहती थी। जब तक विद्यार्थी वेदमन्त्रों का सम्यक् उच्चारण नहीं करने लगता था। मौखिक उच्चारण से विद्यार्थी बोलने की कला का विकास होता था। तदनन्तर मन्त्रों के अर्थ का ज्ञान कराया जाता था। विद्यार्थीयों के व्यक्तित्त्व को प्रखर बनाने के लिए वादविवाद की प्रक्रिया का भी प्रचलन था। ऋग्वेद के एक मन्त्र से एतद् विषयक संकेत प्राप्त होता है।[1]

गुरूकुल परम्परा में विद्यार्थी गुरू के सान्निध्य में रहकर गुरू के शिष्टाचार सदाचार आदि को ग्रहण करता हुआ वेदाभ्यास, करता था। गुरू शुश्रूषा उसका परमधर्म था। अयोध्या नगरी उस काल का प्रधान शिक्षा केन्द्र थी। वहाँ उपाध्याय सुधन्वाधा शिक्षालय था जहाँ राजकुमार शास्त्राभ्यास के साथ–साथ शास्त्राभ्यास भी करते थे।

वशिष्ठ ऋषि के आश्रम में परम्परागत शिक्षक ही जाते थे। उस समय सूत मागधों की पौराणिक पाठशालाओं का भी संचालन हो चुका था। यज्ञादि से शिक्षा संचालन में सहायता प्राप्त होती थी।

प्रोफेसर मैक्समूलर का मत है

निःसन्देह मनुष्य की मूल भाषा एक ही थी। जब भाषा मनुष्य को ईश्वर ने दी है। तब उसमें भेद कैसे हो सकता है। मनुष्य को अनेक भाषायें ईश्वर ने क्यों प्रदान की। ईश्वर ने एक ही भाषा प्रदान की थी और वह मूल भाषा संस्कृत है। संस्कृत से ही समस्त भाषायें निकली है। भारत से ही मनुष्य चारों ओर जाकर बसे हैं। क्योंकि मानव परिवार की भाषा का मूल एक ही होना चाहिए। मुख्य मूल भाषाओं में से आदि भाषा एक ही होना चाहिए। मुखामूल भाषाओं में से आदि भाषा कौन सी है। इसके निर्णय में विद्वानों में अधिक मतभेद नहीं है। भाषा शास्त्री विना मतभेद के प्रायः मानते हैं कि संस्कृत से ही सभी मूलभाषायें निकली है, इसे प्रमाणों से सिद्ध करना कठिन नहीं है।

मूलभाषा में दूसरी भाषाओं के विकृत शब्द नहीं होना चाहिए। दूसरी भाषाओ में उसके शब्द ज्यों के त्यों अथवा विकृत रूप में भी होना चाहिए। दूसरी सभी भाषाओं के लाक्षणिक एवं सांकेतिक शब्दों को छोड़कर सभी शब्दों के मूलरूप उसमें मिलने चाहिए। वर्तमान सभी

भाषाओं की विकृतियों का उसमें मूलाधार होना चाहिए वह भाषा सबसे जटिल होनी चाहिए।

लेटिन, ग्रीक, हिबू आदि मूलभाषा कही जाने वाली भाषाओं में सस्कृत के शब्द भरे पडे हैं। संस्कृत शब्दों से विकृत होकर ही उनके शेष शब्द बने है। संस्कृत में 47 वर्ण है, रूसी भाषा में 35, फारसी में 31 तुर्की और अरबी में 28, अंग्रेजी में 36, फ्रेंच में 25 लैटिन और हिब्रू में 20 और बाल्टिक में 17 अक्षर है। चीनी भाषा में अक्षरों के बदले शब्द हैं, अतः उनकी गणना यहाँ सम्भव नहीं। ऊपर की भाषाओं में कई ऐसे वर्ण हैं, जिनका उच्चारण एक ही है। अंग्रेजी के समान कुछ भाषायें कई भाषाओं से बनी हैं। उनमें अनेक भाषा होने से अक्षर बढ़ गये हैं, परन्तु उच्चारण नहीं बढ़े। उच्चारण की दृष्टि से संस्कृत का एक अक्षर भी व्यर्थ नहीं है अतः हमारी मूल भाषा संस्कृत है, जो सभी भाषाओं की जननी है।

भाषा और साहित्य का अद्भुत सम्बन्ध है। साहित्य भाषा से अभिव्यक्ति प्राप्त करता है। साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है। अतः साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। भारतीय जीवन एवं संस्कृति के सभी विभागों में विचारो एवं आदर्शो को लेकर जो भी उन्नति हुई, धर्म कला, ज्ञान– विज्ञान, दर्शन धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, भारतीय आत्मा का ही नहीं अपितु समस्त मानव समाज के विकास के अधूरे भित्तिचित्र है। हर एक भाषा का एक साहित्य होता है, और उस संस्कृति से उस प्रकार का संस्कार बनता है। जिस भाषा का जैसा साहित्य होगा, उस भाषा के संस्कार भी उसी विचार धारा के होंगे। भारत की राष्ट्रीय संस्कृति पुराण साहित्य की देन है। भारतीय आचार–विचार एवं संस्कार पुराणों से प्रभावित हैं। इसीलिए पुराण प्रतिपादित देवताओं के प्रति महापुरूषों के प्रति ऋषियों एवं मुनियों के प्रति लोगों की अविचल श्रद्धा है। अपने साहित्य में उन्होंने प्राचीन वैदिक साहित्य से लेकर अपने इतिहास के अर्वाचीन विकासोन्मुख काल का सम्भावित विवरण एवं मानव प्रवृत्तियों का चित्रण अपने साहित्य में किया है। जो आज भी अक्षरशः सत्य प्रतीत होता है। जिस देश का साहित्य जितना ऊर्जावान् होगा उस देश का जीवन उतना ही सम्पन्न होगा।

बघेलखण्ड प्रारम्भ से ही एक प्रमुख शैक्षणिक केन्द्र रहा है, इसीलिये शैक्षणिक दृष्टि से इस क्षेत्र का विशेष महत्व है। यहाँ प्रदेश एवं देश के विभिन्न हिस्सों से विद्यार्थी अध्ययन करने आते हैं।

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय

यह विश्वविद्यालय इस धरती के वीर सपूत, बघेलखण्ड में कांग्रेस के संस्थापक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी[2] कप्तान अवधेश प्रताप सिंह के नाम पर 20 जुलाई 1968 को स्थापित हुआ। कांग्रेस में सक्रिय सहभागिता के पूर्व कप्तान अवधेश प्रताप सिंह रीवा स्टेट आर्मी में ''कैप्टन'' के पद पर पदस्थ थे। इस विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति श्री एम.एच.राव तथा प्रथम कुल सचिव प्रो. बी.आर.माथुर नियुक्त किये गये। विश्वविद्यालय का कार्यकाल 25, सिविल लाइन्स बंगले से प्रारम्भ होकर प्रवीण कुमारी पाठशाला में स्थापित हुआ और फिर पं. शम्भूनाथ शुक्ल के अथक प्रयास से नये प्रशासनिक भवन सिरमौर रोड रीवा में 21.05.1975 को विधिवत् प्रारम्भ हुआ। इस भवन का उद्घाटन तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री प्रकाश चन्द्र सेठी ने किया था। पं. शम्भूनाथ शुक्ल इस विश्वविद्यालय के प्रथम पूर्णकालिक कुलपति नियुक्त हुये। प्रारम्भ में इस विश्वविद्यालय के क्षेत्राधिकार में पूर्व विन्ध्य प्रदेश के सात जिले–रीवा, सीधी, सतना, शहडोल, पन्ना, छतरपुर, उमरिया तथा अनूपपुर इसके क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत है। जुलाई 1992–93 में यह विश्वविद्यालय अपनी रजत जयन्ती मना चुका है। इस विश्वविद्यालय को अखिल भारतीय सेवाओं, नेट आदि की प्रतियोगी परीक्षाओं का केन्द्र बनाया जा चुका है। उल्लेखनीय है कि नेट परीक्षा का यह पूर्व में भी केन्द्र था।

ठाकुर रणमत सिंह स्वशासी महाविद्यालय (उत्कृष्टता केन्द्र),

पूर्व दरबार कालेज, रीवा

एक शताब्दी से अधिक के उज्ज्वल इतिहास अपनी गौरवमयी परम्पराओं से युक्त मध्य प्रदेश का यह एक प्रमुख महाविद्यालय है, जो सन् 1930 में इन्टरमीडियट, सन् 1944 में स्नातक तथा सन् 1946 में स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रूप में विकसित हुआ। यह महाविद्यालय अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा का एक घटक महाविद्यालय है। यह सिविल लाइन क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 7 पर स्थित है। यह महाविद्यालय इस क्षेत्र के अमर शहीद ठाकुर रणमत सिंह के नाम पर स्थापित है, जिन्होने आजादी की पहली लड़ाई 1857 में अंग्रेजो से लोहा लिया था। यह महाविद्यालय प्रारम्भ में कलकत्ता, इलाहाबाद, आगरा व सागर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध रहने के पश्चात् वर्तमान समय में अवधेश प्रताप सिंह विश्वद्यिालय का अंग है। 1957 के पूर्व यह महाविद्यालय ''दरबार कालेज'' के नाम से सम्पूर्ण देश में विख्यात था। इसी महाविद्यालय से रीवा नगर के अनेक महाविद्यालयों की उत्पत्ति हुई है, इनमें कृषि महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, नवीन विज्ञान महाविद्याय, शिक्षा महाविद्यालय के नाम विशेष उल्लेखनीय है। इस समय इस महाविद्यायल को मध्य प्रदेश शासन द्वारा उत्कृष्ट केन्द्र घोषित किया गया है। इस महाविद्यायल के छात्र न्याय, राजनीति, प्रशासन, शिक्षा, विज्ञान, खेल, व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में अपनें कीर्तिमान स्थापित किये है। म0प्र0 के पूर्व मुख्यमंत्री, पूर्व राज्यपाल व पूर्व केन्द्रीय मंत्री व देश के प्रसिद्ध नेता स्वर्गीय कुंवर अर्जुन सिंह, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्रीनिवास तिवारी आदि अनेकों प्रसिद्ध व्यक्तियों ने इसी महाविद्यालय से शिक्षा ग्रहण की थी।

उल्लेखनीय है कि इस पुस्तक के लेखक प्रोफेसर एस. अखिलेश इसी महाविद्यालय के छात्र रहे हैं और वर्तमान समय में यहाँ समाजशास्त्र विभाग में पदस्थ हैं। उन्हे भारत सरकार द्वारा पुस्तक के लेखन के लिये तीन बार (सन् 1997, 1998 तथा 2000) प्रतिष्ठित पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त एवार्ड से सम्मानित किया गया है।

कृषि महाविद्यालय रीवा

रीवा में कृषि महाविद्यालय की स्थापना 1954–55 में की गई। कृषि महाविद्यालय रीवा द्वारा विभिन्न कृषि राष्ट्रीय परियोजनायें संचालित कर अनुसंधान कार्य किये जा रहे हैं। इन परियोजनाओं में प्रमुख हैं लघु धान्य परियोजना, राष्ट्रीय कृषि तकनीकी परियोजना आदि। कृषि महाविद्यालय द्वारा अभी हाल ही में कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना का प्रस्ताव भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् कोभेजा गया है। केन्द्र की स्थापना के लिये कुटुलिया स्थल का चयन भी कर लिया गया है। कृषि महाविद्यालय रीवा के कई कृषि वैज्ञानिकों ने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कीर्ति अर्जित कर रीवा का नाम रोशन किया है। वर्तमान समय में देश में 30 कृषि विश्वविद्यालय हैं तथा 4 कृषि संस्थानों को कृषि विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त है। रीवा कृषि महाविद्यालय जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्विविद्यालय, जबलपुर से सम्बद्ध है। कृषि महाविद्यालय रीवा के अन्तर्गत पन्ना, सीधी एवं शहडोल के कृषि विकास केन्द्र कार्यरत हैं।

शिक्षा महाविद्यालय, रीवा

ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय (पूर्व दरबार कालेज) से कुछ विभागों को शैक्षणिक सक्षमता तथा प्रशासकीय सुविधा के लिये 1958 में अलग कर पृथक महाविद्यालयों का रूप प्रदान किया गया। शिक्षा महाविद्यालय रीवा इन्हीं में से एक है। 1958 से यह महाविद्यालय एक अलग इकाई के रूप में नगर में प्रतिष्ठित है। यहाँ बी.एड. और एम.एड. की कक्षायें संचालित होती हैं। शिक्षा विषय में उच्च स्तरीय अनुसंधान की सुविधायें यहाँ उपलब हैं। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के इन सर्विस

कोर्सेज भी यहाँ संचालित किये जाते हैं। राष्ट्रीय पर्वों पर एवं विशेष अवसरों पर यहॉ आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम आपनी श्रेष्ठता के लिये मशहूर हैं। यह महाविद्यालय यूनिवर्सिटी रोड में स्थित है।

शासकीय कन्या महाविद्यालय, रीवा

शासकीय कन्या महाविद्यालय की स्थापना सन् 1961 में हुई थी। इस महाविद्यालय की प्रथम प्राचार्य प्रो. श्रीमती रमोला चौधरी थी। इस महाविद्यालय की छात्राओं ने अनेक विधाओं में अपने कीर्तिमान राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किये हैं।

आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, रीवा

मूलतः विज्ञान विषयों के अध्ययन हेतु ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय से वर्ष 1963 में विज्ञान महाविद्यालय की स्थ्ज्ञापना की गई। उस समय टी.आर.एस. महाविद्यालय के प्राचार्य अलग से प्रो. नाफड़े थे। विज्ञान महाविद्यालय के प्रथम प्राचार्य प्रो. एस.एन. कवीश्वर नियुक्त हुये। आगे चलकर भारत सरकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय की योजना के अनुसार देश के कुछ प्रमुख महाविद्यालयों को ''माडल कालेज'' बनाया गया। रीवा में यह दर्जा 1983–1984 में विज्ञान महाविद्यालय को प्राप्ज हुआ। डॉ दयाल सिंह माडल साइन्स कालेज के पथम प्राचार्य नियुक्त हुये। इस महाविद्यालय में स्नातक कक्षाओं के साथ–साथ रसायनशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, प्राणिशास्त्र, भू–गर्भशास्त्र, भौतिकशास्त्र, गणित एवं सांख्यकी विषयों की स्नातकोत्तर कक्षायें संचालित है तथा उत्कृष्ट शोध कार्य किये जाते है। यह महाविद्यालय सिविल लाइन्स स्थित राज निवास के पास एक विशाल भवन में स्थित है। इस महाविद्यालय के छत्रों ने अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर रीवा का नाम रोशन किया है।

नवीन विज्ञान महाविद्यालय, रीवा

रीवा में विज्ञान महाविद्यालय को आदर्श महाविद्यालय का दर्जा प्राप्त हो जाने पर विज्ञान संकाय का एक नया महाविद्यालय सिविल लाइन्स में ही सन् 1989 में स्थापित किया गया। यहाँ विज्ञान संकाय के स्नातक स्तर की कक्षायें संचालित है।

वेंकट संस्कृत महाविद्यालय, रीवा

इस महाविद्यालय की स्थापना विन्ध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री पं. शम्भूनाथ शुक्ल और उच्च शिक्षा के डाइरेक्टर डॉ. ए. पी. माथुर के सहयोग से 1955 में विन्ध्य प्रदेश शासन द्वारा की गई थी। इस महाविद्यालय के प्रथम प्राचार्य पं. नन्द किशोर थे। उल्लेखनीय है कि बघेलखण्ड की रियासतों के अनेक मुस्लिम छात्रों नें यहॉ से संस्कृत विषय की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। वर्तमान समय में इस महाविद्यालय का भवन जर्जर स्थिति में है। स्नात्तकोत्तर संस्कृत विषय में प्रथम स्थान प्राप्त करनें वाले छात्र को '' महन्त पंचम दास प्रमुख द्वार मुखारबिन्दु चित्रकूट स्वर्णपदक'' रीवा विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया जाता है।

अभियांत्रिकी महाविद्यालय, रीवा

इस महाविद्यालय की स्थ्ज्ञापना सन् 1964 में म.प्र. शासन द्वारा की गई है। 1964 से 1972 तक इस महाविद्यालय की कक्षायें विज्ञान महाविद्यालय तथा शिक्षा महाविद्यालय के भवन में संचालित होती रही। 1972 में नया भवन निर्मित हो जाने पर यह महाविद्यालय वहॉ संचालित होने लगा। अभियांत्रिकी महाविद्यालय में पाँच विधाओं–सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल इलेक्ट्रानिक्स एवं टेलीकम्यूनिकेशन में अध्ययन होता है। इस महाविद्यालय के छात्रों ने रीवा का नाम राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सुस्थापित किया है। यहाँ के कुछ छात्र संयुक्त राज्य अमेरिका में कार्य कर रहे हैं, जिनमें सर्वश्री राजेन्द्र कुमार जैन और हरिचरण मिश्र का नाम उल्लेखनीय है। सुश्री विनीता टण्डन भारतीय प्रशासनिक सेवा में है। इस संस्थान के अनेक छात्रों ने एटामिक एनर्जी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किये है। इनमें सर्वश्री मोले प्रसाद मिश्र, दरबान सिंह राणा, चन्द्रकान्त पिठवा, विश्वम्भरदत्त शर्मा, दशरथ शुक्ल के नाम उल्लेखनीय हैं। यहाँ के कई छात्र आर्मी इंजीनियरिंग सेवाओं में भी है। बी.ई. सिविल में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को खुशीराम दुसाज स्वर्णपदक विश्वविद्यालय रीवा द्वारा प्रदान किया जाता है।

श्यामशाह चिकित्सा महाविद्यालय, रीवा

यह महाविद्यालय 1963 में इस क्षेत्र के वीर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी लाल श्याम शाह (कसौटा राज घराने से सम्बन्धित) के नाम से स्थापित किया गया है। स्वतंत्रता के प्रथम राष्ट्रीय युद्ध 1857 में लाल श्याम शाह ने अंग्रेजो के शासन को समाप्त करने का बीड़ा उठया था। 1963 से 1980 तक यह महाविद्यालय वर्तमान विज्ञान महाविद्यालय के भवन में संचालित था। 1980 में नये भवन में यह स्थानान्तरित हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता माननीय श्रीयुत श्रीनिवास तिवारी तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री ने की थी। 1986 में मुख्यमंत्री म.प्र. शासन श्री मोती लाल बोरा द्वारा नये ओ.पी.डी. भवन का उद्घान किया गया। श्याम शाह चिकित्सा महाविद्यालय की रजत जयन्ती महामहिम डॉ शंकर दयाल शर्मा की अध्यक्षता में 23–24 मार्च 1990 को मनाई गई है। इस चिकित्सा महाविद्यालय क कई चिकित्सक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं में फेलाशिप अध्ययनों के लिये चयनित किये जा चुके हैं।

आयुर्वेद महाविद्यालय, रीवा

रीवा में स्थानीय आयुर्वेदशास्त्रियों द्वारा आयुर्वेद की शिक्षा का प्रारम्भ निजी स्तर पर एक महाविद्यालय स्थापित कर किया गया। प्रारम्भ में यह महाविद्यालय नगर के तरहटी मोहल्ले में संचालित किया गया था। स्थानीय वैद्यों के निजी निवास में विद्यार्थियों का व्यहाकि प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था। इन आयुर्वेदशास्त्रियों में सर्वश्री गोविन्द प्रसाद उपाध्याय, राम प्रताप, लक्ष्मण प्रसाद गर्ग, अनुसुइयॉ प्रसाद एवं वैद्य बटुक प्रसाद आदि का नाम उल्लेखनीय है। इस महाविद्यालय को सन् 1971 में म.प्र. शासन ने अपने आधिपत्य में ले लिया। इस तरह शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय1971 से रीवा नगर में सचालित है।

म.प्र. भोज (ओपन) युनिवर्सिटी

रीवा के युवा वैज्ञानिक **प्रो. के.एस. तिवारी** के कुशल नेतृत्व में म.प्र. भोज विश्वविद्यालय का रीजनल सेन्टर उतरोत्तर प्रगति कर रहा है। इस केन्द्र द्वारा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बी.ए., एम.ए.,एम.बी.ए., बी.एड., पी.जी.डी.सी.ए. आदि कोर्स संचालित किये जा रहे हैं।

जनता महाविद्यालय, रीवा

जनता महाविद्यालय श्रीयुत नगर अनन्तपुर रीवा में स्थित एक अशासकीय महाविद्यालय है, जिसके संस्थापक स्व. ओ.पी. अरोरा थे। पूर्व में यह महाविद्यालय किराये के भवन में बड़ी दरगाह के पास था। 1999 में यह अपने भवन श्रीयुत नगर में स्थानान्तरित हो गया। इस महाविद्यालय की स्थापना 1971 में हुई थी। यहाँ 8 विषयों में स्नातकोत्तर कक्षाएं संचालित हो रही हैं।

पंडित शम्भुनाथ शुक्ल स्नातकोत्तर महाविद्यालय शहडोल (म0प्र0)

शहडोल मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है। यह जिला सुंदर नदियों तथा मैकाल पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है। शहडोल

अन्तर्राष्ट्रीय पवित्र स्थल अमरकंटक से 100 किलोमीटर तथा प्रसिद्ध पर्यटक स्थल बांधवगढ़ से 90 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।
पंडित शम्भूनाथ शुक्ल प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शिक्षा शास्त्री तथा विन्ध्य प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री थे। उन्हीं के नाम पर इस कालेज का नामकरण किया गया। इस कालेज की स्थापना अस्त 1956 में की गई थी जो यह दर्शाता है कि यह कालेज कितना पुराना है। यह कालेज अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा के क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत अपने समस्त कालेजों में वे यह ऐसा पहला कालेज है जिसे ''नैक'' के द्वारा ''ए'' ग्रेड प्रदान किया गया है।
प्रारंभ से ही पण्डित एस.एन.एस. शासकीय पी.जी. महाविद्यालय (स्वायित्त प्राप्त। शहडोल अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की ओर अग्रसर है। तथा इस महाविद्यालय ने इसे दी गई सारी जिम्मेदारियों को पूरा करके दिखाया है। जैसा कि यह महाविद्यालय आर्थिक रूप से अविकसित क्षेत्र से स्थित है, जो शैक्षिक रूप से पिछड़ा है जहां कि लोग गरीबी तथा भुखमरी से जकड़े हुये हैं। जहां की प्रमुख जनता अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की है।
यह मुदना नदी के तट पर स्थित एक विशाल परिसर प्राप्त महाविद्यालय है। यह मध्यप्रदेश के सभी महाविद्यालयों में अति खास है। तथा यह अपने कार्यों को तथा अपने मिशन के बयानों को पूरा करने के लिये प्रतिबद्ध है। महाविद्यालय अपने शानदार ट्रैक रिकार्ड के साथ नई ऊँचाइयों को दूने के लिये अग्रसर है। 53 साल पहले स्थापित इस महाविद्यालय में 200 छात्र एक साथ बैठाने की क्षमता थी जो आज बढ़कर 2500 छात्रों को एक साथ उच्च शिक्षा प्रदान करने की हो गई है। इस शिक्षण संस्थान में विज्ञान तथा व्यवसायिक अध्ययन के छात्रों का कट ऑफ बहुत ऊँचा जाता है जिस कारण से इस महाविद्यालय में प्रवेश पाना किसी भी छात्र के लिये सम्मान की बात होती है।
महाविद्यालय के इन मापदण्डों का प्रतिशत बढ़ाने तथा शत–प्रतिशत पणिाम के साथ इसे और अधिक सार्थक बनाने के लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा राजय सरकार ने वष्र 1995–1996 में इस महाविद्यालय को स्वायत्तता प्रदान की।
महाविद्यालय ने उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता की खोज तथा इसे अधिक सकारात्मक बनाने के लिये स्वायत्त संस्था के रूप में 13 वर्ष से पूरे कर लिये हैं। स्वायत्तता के लाभ से मजबूत और भली–भांति जन भागीदरी समिति द्वारा समर्थित, इस महाविद्यालय ने धन का उपयोग अपनेसंसाधनों को और अधिक बढ़ाने के लिये किया है। तथा इस धन का सबसे अच्छा उपयोग कर प्रतिष्ठित हुआ है।
आधुनिक तकनीकि के माध्यम से महाविद्यालय ने अपने छात्रों को गुणात्मक विकास करने के साथ–साथ एड्स जैसे भयावह रोग के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने का भी प्रशांसनीय कार्य किया है। शैक्षिक गुणात्मकता बढ़ाने के लिये इस संस्थान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का पाठ्यक्रम गठित किया है। साथ ही मौखिक तथा रोजगारन्मुखी दिशा में भी अपना सराहनीय प्रयास किया है। महाविद्यालय में कैंपस साक्षात्कार तथा सेमेस्टर प्रणाली के माध्यम से छात्रों के चतुर्मुखी विकास की नींव तैयार की जाती है।
छात्रों, अभिभावकों तथा प्राध्यापकों के प्रभावी उपयोग के लिये पाठ्यक्रम के पुनर्गठन तथा कुशल परीक्षा जैसी कुछ अतिप्रीाावी उपलब्धियों ने महाविद्यालय को नई ऊँचाईयां प्रदान की है।

संजय गांधी स्मृति शासकीय स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय जिला सीधी

संजय गांधी स्मृति स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना अपेक्षाकृत एक पिछड़े जिले सीधी जिला मुख्यालय में जुलाई 1960 ई. में हुई थी। यह कालेज सीधी जिले का सबसे पहला व सबसे प्रमुख कालेज है। इस महाविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर की पढ़ाई 1982 ई. में प्रारंभ हुई। जन्तु विज्ञान तथा रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर की कक्षाओं का आरंभ 1973–74 ई. से शुरू हुआ। जूलाजी, अर्थशास्त्र राजनीतिशास्त्र और समाज शास्त्र में स्नातकोत्तर स्तर की कक्षाएं 1980 से प्रारंभ हुई। इसके अलावा भौतिकी और भूगोल की 1981–82, इतिहास तथा हिन्दी की 1982–83 वाणिज्य व गणित की 1989–90 से स्नातकोत्तर स्तर की कक्षाएं प्रारंभ की गईं। महाविद्यालय में विधि की कक्षाओं का भी संचालन किया जाता है। इस महाविद्यालय के छात्रों को बैठने के लिऐ 21 कमरों की व्यवस्था है। महाविद्यालय में एक केन्द्रीय पुस्तकालय तथा 11 विभागीय पुस्तकालयों की उत्तम व्यवस्था है। अत्याधुनिक कम्प्यूटर रूम है जिसमें छात्रों को कम्प्यूटर की शिक्षा प्रदान की जाती है। लड़कों के लिए छात्रावास की भी सुविधा है। महाविद्यालय का एक विशाल खेल का मैदान है, जिसमें क्रिकेट, फुटबाल तथा बास्केट बाल के लिए अलग–अलग मैदानों की व्यवस्था है।
वर्तमान में इस महाविद्यालय में 50 नियमित शिक्षक छात्रों का ज्ञानवर्द्धन कर रहे हैं। इस महाविद्यालय में शिक्षक छात्र अनुपात 30:4 है।[3]

शासकीय विवेकानन्द महाविद्यालय मैहर सतना (म0प्र0)

यह महाविद्यालय मैहर में स्थित है जो एक प्रसिद्ध, धार्मिक तथा औद्योगिक स्थान है। यह रेलवे स्टेशन मैहर से तीन कि0मी0 की दूरी पर स्थित है साथ ही मैहर सतना रोड से अच्छा सम्पकर्कित है। यह ग्रामीण क्षेत्र उमरी पैला के विभिन्न स्थानों पर स्थित है प्रसिद्ध ओइला आश्रम में नीलकंठ महाराज इस आश्रम के समीप विश्राम लिये थे। माँ शारदा देवी का मंदिर और संगीतज्ञ उस्ताद अलाउद्दीन खाँ प्रसिद्ध संगीतकार की जन्मस्थली होने के कारण मैहर कस्बे का महत्वपूर्ण स्थान है।
इस महाविद्यालय की स्थापना सन् 1972 में हुई थी। इसे 1986 में शासकीय महाविद्यालय का दर्जा प्राप्त हुआ था। इसकी स्नातकोत्तर कक्षायें कला, विज्ञान तथा कामर्स की कक्षायें सन् 1995 से प्रारंभ हुई थी। इससे छात्रों को प्रमाण के साथ लाभ मिल रहा है। यह महाविद्यालय अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा से संबद्ध है। यहां विभिन्न प्रकार की वरीयता परीक्षायें आयोजित की जाती हैं।
इस महाविद्यालय की स्थिति खेल में जिला तथा राज्य में अच्छी है। इस महाविद्यालय में बालिकाओं की एनसीसी तथा एनएसएस समूह हैं कालेज में अनेक प्रकार ग्रास कोर्ट महाविद्यालय के कैंपस में उपस्थित हैं जनभागीदारी समिति के अन्तर्गत अध्यक्ष योग्य और नेतृत्वशील हैं जो महाविद्यालयीन गतिविधियों को संचालित कर रहे हैं।[4]

शासकीय विधि महाविद्यालय सतना

शासकीय विधि महाविद्यालय सतना जिले मे स्थित है। इसकी स्थापना सन् 1959–60 ई. में हुई थी। यह महाविद्यालय भारत का एक पुराना एवं अत्यंत प्रतिष्ठित महाविद्यालय माना जाता है। यह महाविद्यालय अ0प्र0सिं0 विश्वविद्यालय रीवा से संबद्ध हैं। यह महाविद्यालय बार काउंसिल ऑफ इण्डिया के द्वारा मान्यता प्राप्त है। इस महाविद्यालय में एल0एल0बी0 त्रिवर्षीय पाठयक्रम की शिक्षा प्राप्त की जाती है जो कि बी0सी0आई0 के द्वारा निर्धारित किया जाता है। इस महाविद्यालय का सर्वप्रथम प्रयास यही है कि इस अंचल की युवा पीढ़ी को कानून की बेहतर से बेहतर शिक्षा प्रदान की जाय जिससे इस कालेज से विधि की शिक्षा प्राप्त करने वाला प्रत्येक छात्र देश व समाज में अपना तथा अपने महाविद्यालय व सतना जिले का नाम रोशन करे।

महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय (एम0 जी0 सी0 जी0 यू0) सतना (म0प्र0)

महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना 12 फरवरी 1991 को की गई थी। इसका नामकरण राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के नाम से किया गया है।

इस वि0वि0 की स्थापना का मूल लक्ष्य है ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लड़के एवं लड़कियों को उच्च शिक्षा के सपने को साकार करवाना। यह वि0वि0 पढ़ो, सीखो एवं खोजो की अवधारणा पर आधारित है।

यह वि0वि0 गांधी जी के सपने यानी ग्रामीण विकास को साकार करने की लालसा सें गठित किया गया है। मंदाकिनी जैसी पवित्र नदी के किनारे म0प्र0 शासन के पृथक अधिनियम 9–1991 कि आधार पर महाशिवरात्रि जैसे पवित्र व गरिमामयी त्योहार के दिन चित्रकूट में जो कि सतना जिले में स्थित है में स्थापित किया गया। इस वि0वि0 का मुख्य उद्देश्य है छात्रों को व्यवहारिक व सहज ढंग से शिक्षा व संस्कार प्रदान करना।

ग्रामोदय विश्वविद्यालय की सम्पूर्ण गतिविधियाँ ग्रामीण विकास के इर्द–गिर्द ही घूमती हैं। लगभग एक दशक से भी ज्यादा समय वे इस वि0वि0 ने शिक्षा शोध तथा संस्कारिक गतिविधियों के माध्यम से ग्रामीण विकास में अपना योगदान दिया है। इस वि0वि0 ने पत्रकारिता शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को खासकर महिलाओं को जागरूक व आत्म निर्भर बनाया है। वि0वि0 ने न खत्म होने वाली ऊर्जा के नवीन स्त्रोंतो के अविष्कार व खोज के संबध मे लोगों में रुचि पैदा की हैं। ग्रामीण शिल्पकारों के गुणों (कला)में वृद्धि के लिये यह वि0 वि0 काम कर रहा है। इस वि0 वि0 का क्षेत्राधिकार सम्पूर्ण (म0प्र0) में हैं यह वि0 वि0 अन्य क्षेत्रों में भी अपने केन्द्र खोलने के लिए प्रयासरत है।

उच्च शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण विकास की निरन्तर प्रगति के संदर्भ में यह वि0 वि0 अपने आप में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय वि0वि0 ने युक्तिसंगत ढंग से भारतीय सभ्यता व संस्कृति और आधुनिकता को समेटे हुए आत्मनिर्भर ग्रामीण विकास के लक्ष्य को पूर्ण करने का सपना देखा है और इस सपने को साकार करने कि लिए अपने अभियान में निरन्तर चलायमान हैं।

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सतना

सतना, सुतीक्ष्ण ऋषि के नाम का अपभ्रंश है। लगभग 150 वर्ष पुराना यह व्यावसायिक नगर, विन्ध्य क्षेत्र की औद्योगिक प्रगति का प्रवेश द्वार तो है, ही सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संपदाओं की प्रचुरता के कारण राष्ट्र के मानचित्र में भी विशिष्टता के साथ प्रतिष्ठित है। चित्रकूट, मैहर, भरहुत, रामवन जैसे गरिमामय स्थल और उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, अली अकबर खाँ, पंडित रविशंकर, शहीद पद्मधर सिंह, न्यायमूर्ति जे.एस. वर्मा, जैसे अप्रतिम व्यक्तित्व सतना जिले के गौरव के प्रतीक हैं।

सतना जिले की सर्वोच्च शैक्षणिक संस्था, शहीद पद्मधर सिंह शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय एक सर्वसुविधायुक्त संस्थान है। अनुकरणीय अनुशासनबद्धता, पारंपरिक गुणवत्ता के प्रथम और शैक्षिक निष्ठा से सम्पन्न शैक्षणिक वातावरण के कारण इस महाविद्यालय की गणना प्रदेश के प्रतिष्ठित महाविद्यालयों में की जाती रही है।

इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1958 में स्नातक महाविद्यालय के रूप में हुई थी। 1967 में इसे स्नातकोत्तर महाविद्यालय की श्रेणी प्राप्त हुई। अवधेश प्रताप सिंह विश्व विद्यालय रीवा से संबद्ध इस महाविद्यालय के सर्वांगीण विकास के सभी आयामों को हासिल करते हुए यह महाविद्यालय उन्नयन के नित नये सोपानों की प्राप्ति के लिए अग्रसर है।

महाविद्यालय पुराने और नवीन दो भवनों में संचालित है। पुराना (मुख्य) भवन शहर के मध्य रेलवे स्टेशन के समीप स्थित है। यहाँ प्राचार्य का कार्यालय एवं स्वशासी परीक्षा संचालन विभाग के साथ ही साथ विज्ञान संकाय की कक्षाएँ संचालित होती हैं। महाविद्यालय के नवीन भवन के पास 54 एकड़ जमीन है। नवीन भवन का निरंतर विकास किया जा रहा है और अब तक 58.5 लाख रुपये के निर्माण कार्य कराये जा चुके हैं। आज की परिस्थिति में एक गतिशील शिक्षण संस्थान की आवश्यकता की प्रतिपूर्ति इस विशाल परिसर में ही विकास के द्वारा की जा सकती है। शीघ्र ही यह परिसर एक अत्यंत गरिमामय शिक्षण संस्थान के रूप में पूर्ण विकसित हो सकेगा, ऐसा विश्वास है। महाविद्यालय के विकास के लिए बहुपयोगी नरहरि सभागार के निर्माण हेतु महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने लगभग 4 लाख रुपयों का स्वैच्छिक सहयोग देकर सम्पूर्ण प्रदेश में जनभागीदारी का एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। 1994 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस महाविद्यालय को स्वशासी घोषित किया। स्वशासी योजनान्तर्गत जिले की औद्योगिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरूप महाविद्यालय के शैक्षणिक एवं शैक्षणेत्तर पाठ्यक्रमों में परिवर्तन किया गया। स्वशासी परियोजना के परिचालन को एक निश्चित रूप देने के लिए महाविद्यालय में स्वशासी योजना एकांश की स्थापना की गई पाठ्यक्रम निर्धारण, परीक्षा संचालन और प्राध्यापकों की निष्ठा तथा श्रम से इस महाविद्यालय में स्वशासी योजना सही अर्थों में पल्लवित एवं पुष्पित हो रही है।

शासन की स्वशासी महाविद्यालयों की परिकल्पना को मूर्त रूप प्रदान करते हुए इस महाविद्यालय में विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति का सतत् मूल्यांकन करने के लिए आंतरिक मूल्यांकन योजना द्वारा विद्यार्थियों की प्रतिभा का सतत् मूल्यांकन विभिन्न परीक्षाओं एवं गतिविधियों द्वारा किया जाता है। आंतरिक मूल्यांकन के प्रति विद्यार्थियों को गंभीर बनाने के लिए इसमें अर्जित अंकों को वार्षिक परीक्षाफल में जोड़ा जाता है। साथ ही शिक्षक–अभिभावक योजना के माध्यम से प्रत्येक विद्यार्थी की शैक्षणिक एवं शैक्षिणेत्तर गतिविधियों से उसके अभिभावक को परिचित कराने का प्रयास भी किया जाता है। उक्त दोनों योजनाओं का उद्देश्य छात्र, शिक्षक एवं अभिभावक के संबंधों को प्रगाढ़ बनाते हुए, छात्र की प्रतिभा का निरंतर मूल्यांकन करना और उसे प्रगति के लिए प्रेरित करना है।

महाविद्यालय में विभिन्न विषयों में राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियाँ आयोजित कर, महाविद्यालय के विद्यार्थियों को देश के ख्यातिलब्ध विद्वानों के सम्पर्क में लाने का प्रयास भी कराया जाता है। यह महाविद्यालय इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली, भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल का क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र ;त्महपवदंस ेजनकल ब्मदजतमद्ध भी है। साथ ही इसे दूरवर्ती शिक्षा, अ0प्र0 सिंह वि0वि0 रीवा द्वारा असंस्थागत विद्यार्थियों के शिक्षण का भी केन्द्र बनाया गया है। बी.एस.सी. एवं बी.काम. के छात्रों के लिए एक प्रश्न पत्र के रूप में कम्प्यूटर एप्लीकेशन के अध्ययन की भी सुविधा है। भूगोल में एम.ए. (स्ववित्तपोषी) पाठ्यक्रम भी संचालित हो रहे हैं। कुछ अन्य रोजगारपरक पाठ्यक्रम भी शीघ्र आरम्भ होने की प्रक्रिया में हैं। महाविद्यालय में सिटीजन चार्टर पर पूर्णतः अमल किया जा रहा है जिसका विवरण महाविद्यालय के सूचना पटल पर अंकित किया गया है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी शासकीय कन्या महाविद्यालय सतना (म.प्र.)

सतना नगर में बालिकाओं की उच्च शिक्षा के लिए श्रीमती इन्दिरा गाँधी जी के नाम पर अगस्त 1983 में कला संकाय की मात्र 28 छात्राओं से इस महा वि. का शुभारंभ हुआ। वर्तमान में स्नातक स्तर पर कला, विज्ञान, वाणिज्य गृह विज्ञान तथा स्नातकोत्तर स्तर पर

समाज, संगीत, हिन्दी साहित्य., अंग्रेजी साहित्य, राजनीति, अर्थशास्त्र, रसायन, वनस्पति एवं गृह वि. भी कक्षाएँ संचालित हैं। वर्तमान में महा वि. शासकीय अग्रणी महाविद्यालय सतना के पुराने छात्रावास में लग रहा है। वर्तमान में यहाँ 2800 कन्याएँ अध्ययनरत हैं। वर्तमान प्राचार्या डॉ. श्रीमती कल्पना श्रीवास्तव जी हैं।

शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी

इस महाविद्यालय की स्थापना 15 अगस्त सन् 1983 को हुई थी। यह महाविद्यालय जिले में बालिकाओं की उच्च शिक्षा का एकमात्र केन्द्र है। यहाँ पर विज्ञान एवं कला विषय में स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर तक की कक्षायें संचालित हैं। इस महाविद्यालय से लगी 14 एकड़ भूमि है। जो खेलकूद के मैदान एवं छात्रावास आदि के लिये पर्याप्त है।

इस महाविद्यालय ने शैक्षणिक क्षेत्र में सदा से श्रेष्ठ गुणवत्ताका परिचय दिया है। प्रतिवर्ष इसका परिणाम 75 से 95 प्रतिशत के बीच रहा है। शैक्षणेत्तर गतिविधियाँ– साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं खेलकूद प्रतियोगिताओं की अनेक विधाओं में छात्राओं ने श्रेष्ठ प्रदर्शन किया है। राज्य एवं संभाग स्तर की प्रतियोगिताओं में भी प्रतिनिधित्व करने के लिए यहाँ कि बालिकाएँ चयनित हुई हैं।

शासकीय संस्कृत महाविद्यालय भितरी, सीधी

यह महाविद्यालय रीवा सीधी सड़क मार्ग के मध्क कटौली वस स्टैण्ड के दक्षिण पहाड़ी के नीचे स्थित है। इस महाविद्यालय की स्थापना 1959 में संस्कृत उच्च विद्यालय के रूप में स्वमी ऋषि कुमार जी द्वारा की गई जो भितरी ग्राम के निवासी थे। विद्यालय हेतु उनके एवं उनके परिवार द्वारा भूमि दान में दी गई, जिस पर महाविद्यालय भवन बना है।

कालान्तर में स्वामी ऋषि कुमार जी द्वाराा स्थापित अशासकीय संस्कृत उच्च विद्यालय संस्कृत विद्यालय शासनसधीन हुअ एवं 1968 में स्वामी जी के प्रयास से शासकीय संस्कृत महाविद्याय के रूप में उन्नयित हुआ। वर्ष 1968 से सीधी जिले का एक मात्र शासकीय संस्कृत महाविद्यालय भितरी आद्यतन संचालित है। इस महाविद्यालय में जिले के दूरस्थ ग्रामों के विद्यार्थी प्रवेश लेकर अध्ययन करते हैं। यहाँ प्राच्य संस्कृत साहित्य, व्याकरण, वेद, ज्योतिस आदि विषयों का अध्ययन हो रहा है।

निष्कर्ष

शिक्षा व्यवस्था मुख्य रूप से चार श्रेणियों में विभाजित थी। शारीरिक, मानसिक व्यावहारिक एवं नैतिक शारीरिक शिक्षा के अन्तर्गत मल्लविद्या धनुर्विधा, मृगया रथचर्या, बाहु युद्ध गदा युद्ध, आदि की शिक्षा दी जाती थी। मानसिक शिक्षा के अन्तर्गत वेद वेदांग काव्य, साहित्य, पुराण इतिहास ललित कलायें अर्थशास्त्र राजनीति जैसे विषय पढ़ाये जाते थे। व्यावहारिक शिक्षा में व्यापार, कला–कौशल आयुर्वेद तथा अनेक प्रकार के उद्योग धन्धों का समावेश था। नैतिक शिक्षा द्वारा बालक को सदाचारी नागरिक बनाया जाता था। अनेक प्रकार की रहस्यमयी विद्यायें भी उस समय सिखाई जाती थी। अध्ययन की प्रणाली मौखिक प्रवचन कंठाग्र, अभ्यास, कथावार्त पाठ, स्वाध्याय तथा सामूहिक तर्क–वितर्क रूप में प्रचलित थी।

संदर्भ

1. ऋग्वेद 7/103/5
2. विस्तृत विवरण के लिये देखिये प्रो. ब्रजगोपाल तथा प्रो. एस. अखिलेष की पुस्तक ''स्वतन्त्रता आन्दोलन'' गायत्री पब्लिकेशन, रीवा, पृ. 36–37, 2004
3. महाविद्यालय के बेवसाइट से प्राप्त सामग्री
4. महाविद्यालय के बेवसाइट से प्राप्त सामग्री